(11) हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर- हीरा और मोती शोषण के विरुद्ध हैं। वे हर शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे हैं। उन्होंने गया का विरोध किया फलस्वरूप उन्हें खाने के लिए सूखी घास तथा सूखी रोटियाँ मिली और डंडे की मार भी सहनी पड़ी। अपने इसी स्वभाव के कारण उन्हें कांजीहौस में पुन: बंदी बना लिया गया।

प्रतिक्रिया — हमारे विचार से हीरा और मोती दोनों

अपनी जगह ठीक थे। दोनों ने अत्याचार व शोषणकर्ता के खिलाफ आवाज उठाई और उन्हें यातनाएं सहनी पड़ी।
जब हम अपनी आज़ादी के लिए प्रयासरत होते हैं, तो विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ आ खड़ी होती हैं। कभी-कभी तो प्रताड़ना सहते-सहते हमें प्राण भी गँवाने पड़ते हैं। परन्तु अपने आत्मस्वाभिमान व वजूद को बचाने के लिए अत्याचारियों को ललकारना भी पड़ता है — जैसा कि हीरा-मोती ने साँड को ललकार कर किया।

(12) क्या आपको लगता है यह कहानी आज़ादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?

P.T.O.

Scanned by CamScanner

उत्तर यह कहानी, अप्रत्यक्ष रूप से आजादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है। जिस तरह हीरा-मोती गया के द्वारा किए गए अत्याचार को न सहकर अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष करते हैं। आज़ादी न मिलने तक कठिनाइयों का सामना करते हैं। अपने आपको विघ्न व बाधाओं से निकाल के हिम्मत के बल पर अंततः स्वतंत्रता प्राप्त कर लेते हैं। उसी तरह देश की आज़ादी के लिए लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी तब जाकर आने वाली पीढ़ियों ने भारत को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त पाया और स्वतंत्र वातावरण में साँस लिया।

गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

① जानवरों में गधा .... दिखाई देगी।

जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पहले दर्जे का बेवकूफ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत ग़रीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है; किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो चाहे जैसी खराब सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी।

(क) हम किसी को गधा कब और क्यों कहते हैं?

उत्तर जब हम किसी मनुष्य को निरामूर्ख कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं।

(ख) गधे को गधा कहने के पीछे क्या कारण होते हैं?

उत्तर : गधे को गधा कहने का कारण उसकी सहनशीलता और सीधापन है।

(2) गधे की कौन-सी विशेषता अन्य पशुओं से भिन्न है?

उत्तर : गधे की अत्यधिक सहनशीलता, संतोष वृत्ति, सुख-दुःख में एक जैसे रहना उसे अन्य पशुओं से भिन्न करती है। अन्य जानवर गधों के समान सीधे और संतोषी नहीं होते अन्य जानवरों को क्रोध भी आता है।

(3) वैशाख में — — — — — — उपयुक्त नहीं है।

वैशाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता है, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण हैं वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं; पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है।

(i) गद्यांश में किसका वर्णन है? वैशाख में कुलेल करने का क्या आशय है?

उत्तर : इस गद्यांश में गधे के स्वभाव का वर्णन किया गया है। वैशाख में कुलेल करने का आशय आनंदित होकर उछल-कूद करने से है। कारण सर्वत्र हरियाली होने के कारण उसे भरपेट हरी घास खाने को मिल जाती है।

(4) कहानी तथा कहानीकार का नाम लिखिए।

उत्तर : कहानी — दो बैलों की कथा
कहानीकार — प्रेमचंद

Scanned by CamScanner

(ग) गधे और ऋषि-मुनि में क्या समानता होती है?

उत्तर गधे और ऋषि-मुनियों में निम्नलिखित समानताएँ होती हैं —

- सुख-दुख में एक-समान रहना।
- सरल तथा सीधे होना।
- अत्यधिक सहनशील होना तथा क्रोध न करना।
- हर हाल में संतुष्ट रहना।

(घ) यह अनुच्छेद हमारा ध्यान किस सच्चाई की ओर खींचता है?

उत्तर यह अनुच्छेद हमारा ध्यान समाज में व्याप्त इस सच्चाई की ओर खींचता है कि संसार सरलता, सीधेपन, सहनशीलता तथा अक्रोध को मूर्खता कहता है। अतः हमें अत्यधिक सरल और सहनशील नहीं होना चाहिए। अपने साथ हो रहे अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार (विरोध) करना चाहिए।

(ङ) 'स्थायी विषाद' का क्या अर्थ है?

उत्तर चेहरे पर हमेशा दिखाई देने वाली उदासी को 'स्थायी विषाद' कहते हैं।

(च) 'पराकाष्ठा' का क्या अर्थ है?

उत्तर पराकाष्ठा से तात्पर्य चरम सीमा या बहुत अधिकता से है।

(3) दोनों उन्मत्त होकर ——— पकड़ लो।

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हुए घर की ओर दौड़े। वह इनका थान है। दोनों दौड़कर अपने थान पर आए और खड़े हो गए। झूरी भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

Scanned by CamScanner

झूरी दरवाजे पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आँखों से आँसू बहने लगे। एक झूरी का हाथ चाट रहा था।

दढ़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

(क) दोनों बैल कौन थे? उन्मत्त होकर दौड़ने का क्या कारण था?

उत्तर- दोनों बैल हीरा-मोती थे। झूरी के घर से निकलने के बाद उन पर कई कठिनाइयाँ आईं, उन्होंने अत्याचार सहे। जब कसाई उन्हें खरीदकर ले जा रहा था तब उन्हें मार्ग जाना-पहचाना लगा। अपने घर की याद आते ही वे प्रसन्नता से उन्मत्त होकर झूरी के घर की ओर दौड़ पड़े।

(ख) झूरी कौन था और बैलों को क्यों गले लगाने लगा?

उत्तर झूरी एक किसान था। उसने अपने बैलों को अपने साले गया को दिया था। गया दुबारा सताये जाने पर वे वहाँ से भाग खड़े हुए और भटकते अचानक उन्हें पाकर झूरी प्रसन्न हुआ और उन्हें गले लगाने लगा।

(ग) दढ़ियल कौन था और उसने बैलों की रस्सी क्यों पकड़ ली थी?

उत्तर दढ़ियल एक कसाई था। उसने बैलों को कांजीहौस की नीलामी में खरीदा था तथा उन्हें काटने ले जा रहा था। दोनों बैल कहीं भाग न जाएँ इसलिए उसने उन दोनों की रस्सी पकड़ ली।

(घ) लेकिन गधे का — — — — — — — होता है।

लेकिन गधे का एक छोटा भाई और भी है, जो उससे कम ही गधा है, और वह है 'बैल'। जिस अर्थ में हम गधे का भी प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से

मिलते-जुलते अर्थ में 'लड़िया के ताऊ' का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग बैल का शब्द बेवकूफों में सर्वाधिक कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं है। बैल कभी-कभी मारता भी है, कभी-कभी अड़ियल बैल भी देखने में आता है। और भी कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट कर देता है अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है।

(क) गधे का छोटा भाई किसे और क्यों कहा गया है?

उत्तर. गधे का छोटा भाई बैल को कहा गया है क्योंकि वह कभी-कभी मारता भी है और अड़ियल रूप भी धारण कर लेता है। जबकि गधा ऐसा नहीं कर पाता।

(ख) 'लड़िया के ताऊ का प्रयोग' किस अर्थ में किया गया है?

उत्तर. गधे का छोटा भाई और 'लड़िया के ताऊ' दोनों का ही प्रयोग बैल के लिए किया गया है।

(ग) प्रस्तुत गद्यांश में बैलों का व्यवहार कैसा है?

उत्तर. प्रस्तुत गद्यांश में बैलों का व्यवहार कभी-कभी अड़ियल रूप में देखने को मिलता है और ऐसा तब होता है जब वे अपने मालिक से असंतुष्ट होते हैं।

(घ) बैल के स्वभाव की कुछ विशेषताएँ बताइए।

उत्तर. बैल स्वभाव से बहुत सीधा-सरल और सहनशील होता है। वह बहुत परिश्रमी होते हैं। हर परिस्थिति में संतुष्ट रहना उनका स्वभाव होता है। परंतु कभी-कभी अत्याचार होने पर वह असंतुष्ट होकर वार भी करता है। मन के अनुरूप कार्य न होने पर वह अड़ भी जाता है।

8. 'गधों' का सांकेतिक अर्थ क्या है?

उत्तर 'गधों' का सांकेतिक अर्थ 'मूर्ख' होता है।

लघु प्रश्नोत्तर :-

(1) झूरी दुवार पर बैठकर क्या कर रहा था?

उत्तर झूरी दुवार पर बैठकर धूप सेंक रहा था।

(2) दोनों बैल घर की ओर कैसे चले?

उत्तर दोनों बैल घर की ओर, उन्मत्त होकर चले।

(3) 'थान' का क्या आशय है?

उत्तर पशुओं के बाँधे जाने की जगह को 'थान' कहते हैं,

(4) बाड़े की दीवार किससे बनी थी?

उत्तर बाड़े की दीवार मिट्टी से बनी थी।

(5) 'मल्लयुद्ध' से क्या आशय है?

उत्तर मल्लयुद्ध का आशय कुश्ती से है।

(6) 'पछाई जाति' से क्या आशय है?

उत्तर पछाई जाति का आशय पालतू जानवरों की एक नस्ल से है।

(7) मूर्खों में सर्वश्रेष्ठ किसे माना गया है?

उत्तर मूर्खों में सर्वश्रेष्ठ गधों को कहा गया है।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

प्रश्न (5) कहानी में जगह-जगह मुहावरों का प्रयोग हुआ है। कोई पाँच मुहावरे छाँटकर वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उत्तर कहानी में प्रयोग पांच मुहावरे :-

(1) ईंट का जवाब पत्थर से देना
अर्थ- दुगना शक्ति बदला लेना
वाक्य- यह दुनिया इसी को सम्मान देती है जो ईंट का जवाब पत्थर से देना जानता हो।

(2) मन फीका करना (उदास होना)
वाक्य- गया के घर में सूखा भूसा मिलने पर दोनो बैलो ने मन फीका कर लिया।

(3) जी तोड़ काम करना (कठिन परिश्रम करना)
वाक्य- भारतीय मज़दूर सर्वत्र जी तोड़ काम करते हैं।

(4) दिल भारी हो जाना (दुखी होना)
वाक्य- झूरी का घर छूट जाने से हीरा-मोती का दिल भारी हो गया।

(5) गद्गद होना (अत्यधिक प्रसन्न होना)
वाक्य- हीरा मोती को देख कर झूरी गद्गद हो गया।

Scanned by CamScanner

आत्माध्ययन

प्रश्न-13 बस इतना ही काफी है।
फिर मैं भी और लगा देता हूँ।

ही, भी वाक्य में किसी बात पर ज़ोर देने का काम कर रहे हैं ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिनमें निपात का प्रयोग हुआ हो –

उत्तर निपात से युक्त पाँच वाक्य निम्नलिखित हैं –

(ही)

1. जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही नोंक-झोंक होने लगती है।
2. एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।
3. कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है।
4. ज़्यादा से ज़्यादा मेरी ही गरदन पर रहे।
5. दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे।

(भी)

1. कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है।
2. उसके चेहरे पर असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी।
3. झूरी का एक छोटा भाई और भी है।
4. एक मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता था।
5. कभी-कभी . . अड़ियल बैल भी देखने में आता है।

14 रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उसके भी भेद लिखिए —

(क) दीवार का गिरना था कि अहाते में पड़े हुए सभी जानवर चौंक उठे।

उत्तर मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य – अहाते में पड़े हुए सभी जानवर चौंक उठे।

गौण उपवाक्य : दीवार का गिरना था।

(ख) सहसा एक हट्टा-कट्टा आदमी, जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर, आया।

उत्तर- मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य – सहसा एक हट्टा-कट्टा आदमी आया।
गौण उपवाक्य – जिसकी आँखें लाल थीं और मुद्रा अत्यंत कठोर

(ग) हीरा ने कहा – गया के घर से नाहक आये।
मिश्र वाक्य
मुख्य उपवाक्य – हीरा ने कहा।
गौण उपवाक्य – गया के घर से नाहक आये।

(घ) मैं बु बेचूँगा, तो लिखेंगे।

उत्तर मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य – तो लिखेंगे।
गौण उपवाक्य – मैं बेचूँगा।

Scanned by CamScanner

ङ. अगर वह मुझे पकड़ता तो बे-मारे न छोड़ता।

उत्तर मिश्र वाक्य

मुख्य उपवाक्य — मैं बे-मारे न छोड़ता।
गौण उपवाक्य — अगर वह मुझे पकड़ता।

शब्दार्थ

बुद्धिहीन = मूर्ख
पहले दर्जे का बेवकूफ = महामूर्ख
निरापद —— सुरक्षित
सहिष्णुता —— सहनशीलता
विषाद —— दुख
पराकाष्ठा — चरम सीमा
जी तोड़कर —— दिल लगाकर
आदर्श —— श्रेष्ठता, ऊँचाई
सभ्य —— भले, श्रेष्ठ
बछिया के ताऊ —— मूर्ख
रीति —— ढंग या प्रकार
विग्रह —— लड़ाई
मूक —— मौन, चुप
संयोग —— किस्मत
आत्मीयता —— अपनापन
नाँद —— पशुओं के चारे की जगह
पगहिया — पशु बाँधने की रस्सी
गराँव —— बैलों के गले में डालने वाली फुँदेदार रस्सी
पगहा —— खूँटे से बँधी रस्सी
अख्तियार —— अधिकार
मनोहर —— मनभावन, अच्छा
प्रतिवाद —— विरोध, काट
टिटकार —— मुँह से निकलने वाला टिक-टिक का शब्द
तेवर —— चेहरे के भाव
जान से हाथ धोना —— मर जाना
रगेदना —— खदेड़ना, दौड़ाना
मल्लयुद्ध —— कुश्ती

ग्रास ———— कौर
बैरी ———— शत्रु
सालिका ———— नासमा, स्वीकार
कांजीहौस ———— मवेशी खाना,
प्रतिद्वंदी ———— दुश्मन
अंतर्ज्ञान ———— भीतरी ज्ञान
रेवड़ ———— समूह
कागुर करना ———— जुगाली करना, आनंद से चबाना
पुर चलाना ———— रहट चलाना
उन्मत्त ———— पागल
नीलाम ———— बोली बोलकर खरीदना
उछाह ———— उत्साह

आंतरिक प्रश्नोत्तर

प्रश्न सिद्ध कीजिए मोती बिना कारण उग्र नहीं है, वह केवल अत्याचार का विरोधी है।

उत्तर मोती के संवादों पर ध्यान देने के पश्चात ही हम उपर्युक्त कथन को सिद्ध कर सकते हैं-

क- 'अगर वह मुझे पकड़ता तो मैं बगैर मारे नहीं छोड़ता।'

ख- 'मुझे मारेगा तो मैं भी एक-दो को गिरा दूँगा'।'

ग- 'तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उस लड़की को मारती है।'

तीनों संवादों में मोती की उग्रता का कोई-न-कोई कारण है। वह अत्याचार का विरोधी है। वह तभी मारने की सोचता है जब उसे कोई पकड़े या मारे या उसके सामने अत्याचार करे। वह हीरा का अपमान नहीं सह सकता था। हम कह सकते हैं कि मोती की उग्रता सकारण और स्वभाविक ही है। इस लिए वह हमारे समक्ष गरम दल का क्रांतिकारी बनकर आता है।

Scanned by CamScanner